'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ५१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २० फरवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

ट्रस्टके कामकाजका वार्षिक निवेदन

नवजीवन ट्रस्टकी वार्षिक बैठक ता० ७-२-'५४ के दिन बम्बअीमें हुअी। अुसमें पेश किये गये हिसाब अिस अंकमें दूसरी जगह दिये गये हैं। अिस सभाने नये सालका बजट भी मंजूर किया, जो लगभग पिछले सालके हिसाबके आधार पर ही है।

बजटका विचार करते समय अेक बातकी खास चर्चा हुअी। वह थी ट्रस्टकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक पत्रों पर हो रहे घाटेके बारेमें। अिस विषयमें पत्रोंके सम्पादकने अिसी अंकमें चर्चा की है, अिसलिअे यहां अधिक कहना जरूरी नहीं है। अेक दूसरी बातकी तरफ भी अुन्होंने अिशारा किया है। वह है, संस्थाके कर्जके विषयमें। दिये गये हिसाबों परसे पाठक देखेंगे कि कर्जकी रकम संस्थाके मकान बनानेमें लगाअी गअी है, और अुसका ब्याज देनेके साथ-साथ थोड़ी मूल रकम भी चुकाअी जा सकती है। अलबत्ता, यह काफी नहीं है। ट्रस्टके प्रेसको और ज्यादा काम मिले, तो अुसके जरिये यह कर्ज जरूर चुकाया जा सकता है। अुसके लिअे हमारे प्रयत्न जारी हैं।

संस्थाकी अिस तरहकी आर्थिक स्थितिके बारेमें कभी-कभी पूछताछ की जाती है, अिसलिअे अुस सम्बन्धमें मुझे यहां कुछ कह देना चाहिये। नवजीवनकी अुन्नतिमें रस लेनेवाले हमारे अेक आदरणीय नेताको मुझे अिस विषयमें जो स्पष्टीकरण देना पड़ा था, वही नीचे देता हूं। अुससे पाठकोंको जरूरी स्पष्टीकरण मिल जायेगा :

> "अन्तमें मैं आपको ट्रस्टकी आजकी स्थिति बतानेकी अिजाजत लेता हूं। १९५२ के बेलेन्सशीट परसे आप देख सकेंगे कि अपना काम करती हुअी अेक संस्थाके रूपमें ट्रस्टकी स्थिति मजबूत है। परन्तु हमारे सिर लगभग २१ लाखका कर्ज है। प्रेसकी अिमारत तथा हमारे सेवकोंके लिअे मकान बनवानेके लिअे हमें यह कर्ज लेनेकी जरूरत पड़ी थी। सेवकोंके कुल ४१ कुटुम्बोंके रहनेकी व्यवस्था हो चुकी है। प्रेसकी अिमारत तो कांग्रेस महासमितिकी बैठकके समय -- यह बैठक हमारे अहातेमें हुअी थी -- आप देख ही चुके हैं। ट्रस्टको जल्दी यह कर्ज चुका कर अुसके बोझसे मुक्त हो जाना चाहिये। वह कर्जके बोझसे मुक्त हो सकेगा, अैसा मेरा विश्वास है। अिसके लिअे अपने प्रकाशनोंकी कीमत बढ़ानेका हमारा बिलकुल अिरादा नहीं है; और हम अैसा करते भी नहीं। परन्तु मेरा विश्वास है कि अिस बातमें तो आप मेरे साथ जरूर सहमत होंगे कि गांधी-साहित्य पढ़नेवाली जनताको अिस साहित्यकी छपाअी और प्रकाशन सम्बन्धी व्यवस्थाका खर्च तो देना ही चाहिये। हम बाहरका छपाअी-काम करके प्रेसकी मशीनों और अपनी साधन-सामग्रीका पूरा-पूरा अुपयोग करते हैं। हम अपने सेवकोंको प्रोविडेन्ट फंड, महंगाअी भत्ता तथा घरभाड़ा भत्ताके साथ मुफ्त डाक्टरी मदद भी देते हैं। कंपोजिटरों, बाअिन्डरों वगैरा सहित अपने सारे आदमियोंको रोजाना वेतनके हिसाबसे नहीं, बल्कि स्थायी मासिक वेतनके आधार पर ट्रस्टके सेवकोंके रूपमें हमने रखा है और अुन्हें अूपरकी सारी सुविधायें दी जाती हैं।"

गांधीजीके अवसानके कुछ समय बाद ट्रस्टके अध्यक्ष सरदार पटेलकी सूचनासे ट्रस्टने गांधीजीका जीवनचरित्र तैयार करवाकर प्रकाशित करनेका निर्णय किया। यह चरित्र प्रामाणिक हो, अिसलिअे अुसके लिखनेका काम श्री प्यारेलालजीको सौंपा गया। यह जिम्मेदारी अुन्होंने बड़े अुत्साहसे अपने सिर ली। दिसम्बर १९४८ से वे अिस काममें जुटे हुअे हैं। पाठकोंको याद होगा कि अपने कामकी योजनाकी थोड़ी कल्पना अुन्होंने 'हरिजन' पढ़नेवालोंको कराअी थी। गांधीजीके जीवनके अंतिम वर्षोंसे सम्बन्ध रखनेवाला भाग अुन्होंने पहले तैयार किया है। अुसमें कोअी दोष न रह जाय और वह पूर्णतया प्रामाणिक बने, अिसलिअे वे अपनी असाधारण सावधानीसे अुसे सुधार रहे हैं।

गांधीजीके जीवन-चरित्रके अिस कामको ट्रस्ट अपनी अेक खास जिम्मेदारी मानकर अुसके लिअे सालमें लगभग दस हजार रुपये खर्च करता है। और जनवरी १९४९ से दिसम्बर १९५३ तक अिसके पीछे रु० ४४,५३० खर्च हो चुके हैं। आशा है कि अिस परसे पाठकोंको ट्रस्टके कामकाजकी जिम्मेदारीकी ज्यादा स्पष्ट कल्पना होगी।

वर्षभरमें गांधी-साहित्यके प्रकाशनके सम्बन्धमें ट्रस्टने जो काम किया, अुसे बता देना यहां ठीक होगा। सन् १९५३ में नवजीवन ट्रस्टने अंग्रेजीकी १२, हिन्दीकी ८, मराठीकी १ और गुजरातीकी १६ -- अिस तरह कुल ३७ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। यह साहित्य कुल ७,२५९ पृष्ठका होता है, जिसकी कीमत रु० ६९-११-० है।

'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे यह सारा साहित्य खुद खरीदें और जनतामें अुसका प्रचार करें।

१५-२-'५४
(गुजरातीसे)

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

श्री नवजीवन संस्थाका ३१ दिसम्बर, १९५३ के दिनका बैलेन्सशीट

जमा			नामे		
रु०	आ० पा०		रु०	आ० पा०	
८,५६,५७७-	१५-९	श्री आय-व्यय खाते पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी	३,१२,१५०-	९-०	श्री जमीन खरीदीके : खरीद कीमत पर पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
१,५२,०९५-	०-०	श्री मशीन-घिसाअी फंड खाते	१६,४२,२११-	१-६	श्री मकान खाते लागत कीमत पर
	१,२२,०९५-०-०	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी		१६,३८,८७८-१३-६	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	३०,०००-०-०	चालू सालमें घिसाअीके जमा किये		५,०२९-३-०	चालू सालमें बढ़ती की
९८,४६८-	६-९	श्री प्रोविडेन्ट फंडकी रकम खाते		१६,४३,९०८-०-६	
१,६५,२१९-	२-८	श्री मकान-फंड खाते	—	१,६९६-१५-०	सीमेन्ट बिक्री-करके रीफंड मिले
	१,३९,६८५-९-८	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी	४०,०००-	०-०	श्री सामान-असबाब
	२५,५३३-९-०	चालू सालमें घिसाअीके जमा किये		३९,०००-०-०	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
१,१६,०८१-	०-४	श्री अमानत खाते		४,८४४-१०-९	चालू सालमें बढ़ती की
	२,४५६-०-०	श्री हरिजन-सेवक-संघ, दिल्लीको पू० गांधीजीके वसीयतनामेके मुताबिक वार्षिक हिसाबसे देनेकी रकम		४३,८४४-१०-९	
	१,११,१८७-१०-१०	साप्ताहिकोंके चन्देकी, कापीराअिट वगैराकी अमानत देना बाकी	—	३,८४४-१०-९	
	८७३-११-६	पुस्तक तथा वेतन अमानत		४१६-१३-९	विविध बिक्रीके
	१,५६३-१०-०	बिक्री-कर अमानत		३,४२७-१३-०	चालू सालकी घिसाअी
२१,२०,४३३-	८-९	श्री कर्ज :—	३,१६,५८५-	११-६	श्री मशीन-विभागके
	१०,१०,२५२-९-६	श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्टसे प्लाट नं० ९६ की जमीन और अुस पर बंधे हुअे मकानोंकी अिक्वीटेबल गिरवी पर ब्याजसहित		३,०२,६६२-४-६	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	११,१०,१८०-१५-३	श्री विविध व्यक्तियोंसे बिना जमानतकी ब्याजसहित ली गअी रकम— प्रमाणित यादीके अधीन		१३,९२३-७-०	चालू सालमें बढ़ती की
१,५६,४८३-	५-९	श्री जिम्मेदारी :—	९१,०५८-	४-९	श्री टाअिप-विभागके
	४९,०३०-१२-६	खर्च पेटे		९६,३२०-९-३	पिछले बेलेंसशीटके मुताबिक बाकी
	१,०७,४५२-९-३	माल पेटे, पुस्तक अमानत, विविध कर्ज वगैरा		१४,७३७-११-६	चालू सालमें बढ़ती की
				१,११,०५८-४-९	
			—	२०,०००-०-०	चालू सालकी घिसाअी
			१५,०००-०-०		श्री टाअिप-फाअुन्डरीके माल वगैराके तथा चालू सालमें ट्रस्टकी फाअुन्डरीमें जो टाअिप वगैरा बनाया गया, अुसकी कीमतके व्यवस्थापक-ट्रस्टी द्वारा आंके हुअे मूल्यकी प्रमाणित यादीके मुताबिक
			९,३८,३५०-०-०		श्री मालका स्टाक — व्यवस्थापक-ट्रस्टीकी प्रमाणित यादीके मुताबिक : लागत कीमतके आधार पर
				७,७७,०००-०-०	पुस्तकोंका स्टाक
				१,४६,०००-०-०	कागजका स्टाक
				११,०००-०-०	प्रेस-मशीन स्टाक
				४,०००-०-०	जिल्द-बंधाअीके सामानका स्टाक
				३५०-०-०	खादीका स्टाक
			८६,४४८-	८-६	श्री अनुवादकोंको, तथा मालकी अमानत वगैरा खातेकी रकमें
३६,६५,३५८-	८-०				

www.vinoba.in

GANDHI GYAN MANDIR

१,१४,२३०-११-६	दूसरोंसे वसूल करनेकी रकम : बगैर जमानतकी
१,०६,४५०-१४-६	पुस्तकोंकी बिक्री वगैरा सम्बन्धी वसूल की जानेवाली विविध रकमें
५,३८०-०-०	प्रोविडेन्ट फंडमें से कर्मचारियोंको दिया हुआ कर्ज
९६४-१३-०	कर्मचारियोंसे वसूल किया जानेवाला विविध कर्ज
१,४३५-०-०	दिसंबरके मकान-भाड़ेकी वसूली बाकी
६,६४२-०-०	श्री मकान-भाड़ेके तथा सरकारके पास डाकतार वगैरा विभागकी अमानतके
९०,०००-०-०	अहमदाबाद पीपुल्स कोआपरेटिव बैंक लि० के फिक्स्ड डिपोज़िटमें प्रोविडेन्ट फंडकी रकम जमा
१५-०-०	अहमदाबाद पी० को० बैंक लि० का १ शेयर, जिसकी पूरी रकम भर दी गअी है
१,५९५-८-०	फिक्स्ड डिपोज़िट पर चढ़े हुअे ब्याजके
११,०७१-१-३	रोकड़ तथा बैंकमें
९,४३८-२-६	बैंकोंके चालू खातेमें जमा
२९०-०-०	डाककी टिकटें
१,३४२-१४-९	नकद बाकी हाथ पर : मेलके मुताबिक
३६,६५,३५८-८-०	

हमने श्री नवजीवन संस्थाका ता० ३१-१२-१९५३ के दिन पूरे हुअे वर्षका अूपरका बेलेन्सशीट और साथका अुसी दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब हिसाबबहियोंके साथ जांचा है। अिसमें हमने जरूरी स्पष्टीकरण और जानकारी हासिल की है। हम मानते हैं कि हमें दिये गये स्पष्टीकरणों और संस्थाकी हिसाबबहियोंके मुताबिक अूपरका बेलेन्सशीट संस्थाकी सच्ची स्थिति बताता है।

ता० २-२-१९५४
५१, महात्मा गांधी रोड,
फोर्ट, बम्बअी

नानुभाअीकी कंपनी
चार्टर्ड अेकाअुन्टेन्ट्स,
ऑडिटर्स

रविशंकर दवे
हिसाबनवीस

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

श्री नवजीवन संस्थाका ३१ दिसम्बर, १९५३ के दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब

जमा

रु०	आ० पा०	
३,६५,३७०-७-६		श्री मुद्रणालय विभागकी छपाअी, कागज-खरीदी, पुस्तकोंकी जिल्द-बंधाअी, टाअिप-फाअुण्डरी वगैरासे हुअी कुल आय
८५,२०७-७-०		श्री पुस्तक बिक्री विभागकी कुल आय
१८,०४५-४-०		श्री प्रूफरीडिंग व अनुवाद-विभागकी कुल आय
४,४८५-११-९		श्री पुस्तक पुरस्कार (रायल्टी) विभागकी कुल आय।
१,९१७-७-६		श्री मकान-भाड़ा विभागकी कुल आय
	१६,९७०-०-०	मकान-भाड़ेकी कुल आय जिसमें से बाद किये :—
	१५,०५२-८-६	म्युनिसिपल टैक्स, शाखाओंके मकान-भाड़े वगैराके खर्चके
३,५९२-९-६		श्री पत्र-विभागकी कुल आय — वेतन, डाक-तार, पोस्टेज, स्टेशनरी वगैराका खर्च छोड़कर
२३९-१३-०		श्री जमीन तथा विविध साधनोंसे हुअी आय
४,७८,८५८-१२-३		

नामे

रु०	आ० पा०	
२,७५,७२५-५-९		श्री वेतन-खर्चके तथा प्रोविडेन्ट फंडकी रकमके ब्याजसहित
६,६४२-१-९		श्री डाक-तार, पोस्टेज, रवानगी और लायब्रेरी व स्टेशनरी खर्चके
१३,०२३-११-०		श्री टेलिफोन तथा बिजलीकी लाअिटके खर्चके
९,३७४-१२-९		श्री मुसाफिरी, विविध, औषधालय, खादी-खरीदी खर्च, दावा-खर्च तथा ऑडिटरके मेहनतानेके
३५-१४-०		श्री जमीन-मेहसूल खर्चके
५,०५०-५-०		श्री बीमा-प्रीमियम खर्चके
२४,७४६-१२-६		श्री प्रेस-मशीन खर्चके
३,८१०-१३-०		श्री जमीन तथा मकान-मरम्मत खर्चके
६१,४८७-१०-६		श्री ब्याज-बट्टेके
	७०,३९८-३-९	दिये हुअे ब्याज-बट्टेके
—	८,९१०-९-३	मिले हुअे ब्याज-बट्टेके
५३,४२७-१३-०		श्री घिसाअी खर्चके (डिप्रीसियेशन चार्ज)
	५०,०००-०-०	मशीनों और टाअिपकी घिसाअीके
	३,४२७-१३-०	सामान-असबाबकी घिसाअीके
२५,५३३-९-०		श्री बाकी मकान-घिसाअी, जो श्री मकान-फंड खातेमें बेलेन्सशीटमें ले गये
४,७८,८५८-१२-३		

ता० २-२-१९५४
५१, महात्मा गांधी रोड,
फोर्ट, बम्बअी

नानुभाअीकी कंपनी
चार्टर्ड अेकाअुन्टेन्ट्स,
ऑडिटर्स

रविशंकर दवे
हिसाबनवीस

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२० फरवरी १९५४

'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे

अखबारोंसे पाठकोंको पता चला होगा कि नवजीवन ट्रस्टने 'हरिजन' पत्र जारी रखनेका निर्णय किया है। मैं मानता हूं, अिससे पाठकोंको खुशी होगी। देश-विदेशके कितने ही पाठकोंका यह कहना है कि आज ये पत्र देशके कार्यमें अेक खास गरज पूरी करते हैं, अिसलिअे अगर ये बन्द हुअे तो अुतनी कमी जरूर हो जायगी। फिर भी अितना तो साफ है कि स्वावलम्बी बनने जितनी पत्रोंकी ग्राहक-संख्या न हो, तो यह ट्रस्टके लिअे चिन्ताकी बात जरूर मानी जायगी। अिसलिअे पिछले कुछ समयसे ट्रस्टको अिस बारेमें विचार करनेकी जरूरत पैदा होती रही है। अिस साल भी ट्रस्टकी वार्षिक बैठकमें अिस बारेमें विचार किया गया और, जैसा कि शुरूमें मैंने कहा, अुसने अिन पत्रोंको जारी रखनेका निर्णय किया है।

विज्ञापनोंके बिना पत्र चलाना आजके जमानेमें लगभग असंभव-सा माना जाता है। फिर भी गांधीजीने जिस तरह दूसरे अनेक चमत्कार हमें कर दिखाये, अुसी तरह अुन्होंने बिना विज्ञापन लिये पत्र भी चलाकर बता दिया। अितना ही नहीं, अुन्होंने पत्रोंकी बुनियाद पर अपनी अेक प्रकाशन संस्था भी आसानीसे खड़ी कर दी। यह तो वे ही कर सकते थे। फिर वह जमाना भी दूसरा था। अुस समय गांधीजी देशको अेक नया मंत्र देते थे। विदेशी हुकूमतके खिलाफ लड़नेका हममें जोश था। ये पत्र देशका मार्गदर्शन करते थे। अिस सबसे देशको अेक अनोखी प्रेरणा मिलती थी।

यह सब थोड़ा शांत होने लगा कि तुरन्त, गांधीजीके जीवन-कालमें भी, पत्रोंकी ग्राहक-संख्या पर भारी असर पड़ने लगा। अुनके हमारे बीचसे चले जानेके बाद स्वराज्यके नये प्रश्न खड़े हुअे, नअी परिस्थितियां पैदा हुअीं; यह भी सच है कि पुराना जोश अुतर जानेके कारण अुसकी जगह नअी-नअी विचित्र भावनायें लोगोंमें पैदा होने लगीं। वैसी स्थितिमें भी गांधीजीके विचारोंका स्थान तो था ही, आज भी है। अैसा भी कहा जा सकता है कि आज अुनका विशेष स्थान है। अिसलिअे पत्र चालू रहे।

ग्राहक-संख्या पर भी असर होता ही रहा। अिसलिअे जब सन् १९५१ में पत्रोंकी ग्राहक-संख्या घटकर कुल ९००० हो गअी, तब स्व० श्री किशोरलालभाअीने लोगोंसे अपील की। अुसके फलस्वरूप कुछ मित्रोंने काफी अुत्साहसे ग्राहक बढ़ाने पर कमर कसी और लगभग १८ हजार पर अुस संख्याको पहुंचा दिया। लेकिन यह बढ़ती साल पूरा होने पर घटने लगी और आज १९५४ के आरम्भमें पत्रोंके कुल ग्राहक ११,२०६ रह गये हैं। पत्रोंकी ग्राहक-संख्याकी घट-बढ़का अंदाज लगाना हो, तो अिस परसे लगाया जा सकता है।

अैसी स्थितिमें नवजीवन-ट्रस्टको 'हरिजन' पत्रोंके बारेमें सोचना था। जैसा कि अिससे पहले बताया गया है, पत्रोंको स्वावलम्बी बनानेके लिअे लगभग १८ हजार ग्राहक होने चाहिये। अैसा न होनेसे अिस साल ट्रस्टको अिन पत्रोंके प्रकाशनमें करीब २५ हजारका घाटा अुठाना पड़ा है।

अिस घाटेको पूरा करनेके लिअे अेक सुझाव यह मिला कि पत्रोंका वार्षिक चन्दा ६ रुपयेसे बढ़ाकर ८ या ९ रुपये कर दिया जाय। जिस समय ६ रुपये चन्दा तय किया गया था, अुससे आज महंगाअी बहुत ज्यादा बढ़ गअी है। अिसलिअे चन्दा बढ़ाना अनुचित तो नहीं कहा जायगा। लेकिन आजकी महंगाअीके कारण अगर अिसका असर ग्राहक-संख्या पर हो और ग्राहक घट जायं, तो कुल मिलाकर चन्दा बढ़ानेसे कोअी लाभ न होगा। अिसलिअे अिस सुझाव पर अमल नहीं किया गया।

कुछ पाठक आज भी कहते हैं कि चुनाव करके विज्ञापन लिये जायं, तो क्या हर्ज है? अुनकी जानकारीके लिअे यह कह देना जरूरी है कि नवजीवन संस्थाके ट्रस्टनामेमें ही यह शर्त रखी गअी है कि, "संस्था द्वारा निकाले जानेवाले पत्रों, पुस्तिकाओं और पुस्तकों वगैरामें विज्ञापन न लिये जायं।" अिसलिअे यह सूचना व्यावहारिक मानी जाय तो भी कामकी नहीं है।

ट्रस्टनामेमें दूसरी अेक बात है; जिसका यहां जिक्र कर देना ठीक होगा। अुसमें कहा गया है:

> "गुजराती भाषाके साधन द्वारा गुजरातके जीवनमें ओतप्रोत होने और अिस तरह हिन्दुस्तानकी शुद्ध सेवा करनेकी अिच्छा रखनेवाले संस्कारी और गुजराती-भाषापरायण सेवकों द्वारा लोकशिक्षणका काम करके हिन्द-स्वराज प्राप्त करनेके शांतिपूर्ण अुपायोंका प्रचार किया जाय।
>
> अिस अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे:
>
> अेक 'नवजीवन' पत्र चलाया जाय; अुसके द्वारा शांतिपूर्ण स्वराज प्राप्त करनेका प्रचार किया जाय। . . .
>
> संस्थाकी ओरसे अिस समय चलाया जानेवाला 'हिन्दी-नवजीवन' साप्ताहिक अिस दस्तावेजके पैरा ४ की अुपधारा (च) में बताये गये अुद्देश्य*की पूर्तिके लिअे ट्रस्टी लोग ठीक समझेंगे तब तक चलायेंगे। अिसके अलावा संस्थाके अुद्देश्योंकी पूर्तिके लिअे ट्रस्टियोंको दूसरी भाषाके पत्र चलानेकी या पुस्तकों वगैराके प्रचार और प्रसारकी अनिवार्य आवश्यकता मालूम हो, तो वे नियत समयके लिअे और अैसी प्रवृत्तिको हमेशा गौण मानकर चला सकते हैं। अिसी नियमके अनुसार अिस वक्त नवजीवन संस्थाके अधीन चल रहे 'यंग अिंडिया' साप्ताहिक तथा अंग्रेजी पुस्तकोंके प्रकाशन वगैराकी अितर प्रवृत्तिको ट्रस्टी अुचित मानेंगे तब तक जारी रखेंगे।"

अर्थात् गुजराती पत्रका संचालन ट्रस्टका फर्ज माना जायगा। अंग्रेजी और हिन्दी संस्करणोंके बारेमें अैसा नहीं कहा जा सकता। और अिसी कारणसे अुन्हें बंद करनेके बारेमें विचार किया जा सकता है, अैसा ट्रस्टने माना है। दुर्भाग्यकी बात यह है कि अिन दो संस्करणोंके कारण ही ट्रस्टको काफी घाटा होता है। हालांकि अैसा तो हरगिज नहीं कहा जा सकता कि 'हरिजनबन्धु'की ग्राहक-संख्या काफी अच्छी है। वह बहुत बढ़ सकती है। हमारे सारे गांवोंमें, पुस्तकालयोंमें, स्कूलोंमें तथा पढ़े-लिखे वर्गोंके घरोंमें वह अभी नहीं पहुंचा है। अैसा हो तो अकेले 'हरिजनबन्धु'के बल पर ही हिन्दी और अंग्रेजीके संस्करण चालू रह सकते हैं। पाठकोंसे मेरा निवेदन है कि वे अिस दृष्टिसे अपने आसपास, अपने मित्रमंडलमें, तथा जहां भी संभव हो वहां अिस पत्रको पहुंचानेमें मदद करें। अैसा हो तो 'हरिजन' पत्र विज्ञापनोंके बिना भी चल सकते हैं।

अब सवाल यह रहता है कि अैसी हालतमें ट्रस्ट हिन्दी और अंग्रेजी दोनों संस्करण या अुनमें से कोअी अेक संस्करण बन्द क्यों नहीं कर देता? अिसका अेक प्रकारका जवाब पाठकोंको अिस अंकमें व्यवस्थापक-ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित हिसाब और अुस सम्बन्धमें किये

---

* यह धारा अिस प्रकार है:

(च) अंग्रेजी भाषाने देशकी प्रजामें जो अस्वाभाविक प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है अुसे तोड़कर अंग्रेजीकी जगह राष्ट्रभाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानीकी स्थापनाके लिअे प्रचार किया जाय।

www.vinoba.in

गये अुनके निवेदनसे किसी हद तक मिल जाता है। अुस परसे पाठक देखेंगे कि ट्रस्टका सारा हिसाब घाटेका नहीं है। ट्रस्ट अपने अन्य कामोंमें से घाटेकी भरपाअी करने जितनी रकम निकाल लेता है। मैं अिस बातकी तरफ सब लोगोंका ध्यान खींचना चाहता हूं कि छपाअीका काम अिस संस्थाको देकर भी जनता अुसकी मदद कर सकती है।

प्रसिद्ध हो रहे हिसाब परसे पाठक यह भी देखेंगे कि ट्रस्ट पर करीब २१ लाखका कर्ज है।

कर्जकी अिस रकममें से नवजीवनने अपने प्रेसकी अिमारत और सेवकोंके रहनेके लिअे मकान बनवाये हैं। अिस संस्थाकी अेक अलग कालोनी खड़ी करनेका गांधीजीका बहुत पुराना विचार था। अुसके लिअे सन् १९२९ में जमीन भी खरीद ली गअी थी। लेकिन देशमें जो सम-विषम परिस्थितियां पैदा होती रहीं, अुनमें यह काम सन् १९४७ तक न हो सका। गांधीजीका यह स्वप्न पूरा करना ट्रस्टका फर्ज था। सरदार पटेल अिसे अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी मानते थे। स्वराज्य मिलते ही यह काम हाथमें लिया गया और अुसे पूरा किया गया। साथ ही अूपर बताअी नीति स्वीकार करके यह तय किया गया कि बाहरका काम लेकर भी कर्जके अिस बोझको अुतारनेका भरसक प्रयत्न किया जाय। पाठक देखेंगे कि वैसा करके ट्रस्ट आजकी स्थितिमें भी अपनी प्रवृत्ति अच्छी तरह चला सकता है।

अिस कर्जको चुकाने जितनी बड़ी रकम कब मिलेगी, यह सवाल ट्रस्टके सामने खड़ा होना स्वाभाविक है। सरदारश्री थे तब यह विचार हुआ था कि नवजीवन गांधीजीकी स्थापित की हुअी अेक संस्था है। अुसका काम गांधीजीके विचारोंका प्रचार करना है। अिसके लिअे अुन्होंने अपने सारे लेख, पुस्तकें वगैरा नवजीवनको सौंप दिये हैं। गांधीजीके राष्ट्रीय स्मारक कोषके प्रयोजन और अुद्देश्यको देखते हुअे वह अिस काममें मदद पहुंचा सकता है। अिसलिअे अुससे बिना ब्याज रुपये मांगे जायं और यदि मिल जायं तो गांधीजीकी पुस्तकोंके प्रचारमें भी अिस मददका लाभ अुठाया जा सकता है। लेकिन यह विचार ठोस रूप नहीं ले सका।

अिसमें शक नहीं कि पत्रोंके चलनेमें अुनकी नीति और विचार-धाराका भी हाथ होता है। अिसे संभालनेकी जिम्मेदारी मेरे सिर आअी है। ट्रस्ट मुझे आज्ञा दे तो अुसका पालन करना मेरा फर्ज है, अैसी मेरी वृत्ति होनेके कारण यह जिम्मेदारी मैंने स्वीकार की। लेकिन मैं जानता हूं कि मेरी अपनी कुछ मर्यादायें हैं। अुनके भीतर रहकर ही मैं काम कर सकता हूं। अिसका असर पत्रोंकी ग्राहक-संख्या पर पड़े, यह तो स्वाभाविक है। अुसके लिअे मैं जिम्मेदार भी माना जाअूंगा। फिर भी मुझे अिस बातका संतोष है कि पाठकगण मुझे अपनी मर्यादाओंके बावजूद निभा लेनेको तैयार हैं। अिसीलिअे मैं यह काम जारी भी रख सकता हूं।

अन्तमें मैं फिर अेक बार पाठकोंसे प्रार्थना करता हूं कि वे अपने-अपने ढंगसे अिन पत्रोंकी मदद करके ट्रस्टको अिन पर होनेवाले घाटेके बारेमें निश्चिन्त बनावें।

१२–२–'५४ **मगनभाई देसाई**
(गुजरातीसे)

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

गांधीजी

संपादक: **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

टिप्पणियां

जिस स्वतंत्रताके लिअे अुन्होंने काम किया था

नीचेके हिस्से श्री निर्मलकुमार बोस द्वारा स्व० श्री किशोरलाल मशरूवालाको लिखे गये ता० २१-४-'५० के पत्रमें से लिये गये हैं। ये पाठकोंको दो तरहसे दिलचस्प मालूम होंगे: पहले, हमें मिली हुअी आजादीके बारेमें, जिसकी खुशियां हमने कुछ दिन पहले ही मनाअी हैं; दूसरे, अंग्रेजीके बारेमें, जिसके विषयमें आज अितनी बड़ी-बड़ी और अतिशयोक्तिपूर्ण बातें कही जाती हैं:

"ता० ११–८–'४७ को बी० बी० सी० के दो प्रतिनिधि गांधीजीसे बेलियाघाटामें मिलने आये। वे गांधीजीसे अेक छोटासा सन्देश मांगने आये थे, जो लन्दनसे ता० १५–८–'४७ को सारी दुनियामें ब्राडकास्ट किया जानेवाला था। वे लोग गांधीजीसे खुद नहीं मिले; मैंने अुनकी प्रार्थना गांधीजी तक पहुंचाअी। गांधीजीने सन्देश देनेसे अिन्कार कर दिया। अिन अुद्गारोंके साथ यह प्रार्थना फिर दोहराअी गअी कि सारी दुनिया भारतका सन्देश सुननेको बड़ी अुत्सुक है, और गांधीजीसे बढ़कर दूसरा कौन भारतकी तरफसे बोल सकता है?

"जब गांधीजीने यह बात सुनी तो अुन्होंने मुझसे कहा — आजादी मिलनेकी मुझे बिलकुल खुशी नहीं है; मेरी सलाह है कि अिस बातके लिअे प्रतिनिधि लोग पं० जवाहरलाल नेहरूसे मिलें। जिस स्वराजके लिअे मैंने काम किया, वह अभी नहीं आया है।

"मैं बाहर प्रतीक्षामें बैठे हुअे प्रतिनिधियोंके पास गया और गांधीजीका अुत्तर अुन्हें सुना दिया। लेकिन तीसरी बार फिर अुनकी प्रार्थनाके साथ लौटा, जिसमें यह जोड़ा गया था कि चूंकि यह सन्देश केवल अंग्रेजीमें ही नहीं, बल्कि दूसरी विभिन्न भाषाओंमें भी ब्राडकास्ट किया जायगा, अिसलिअे गांधीजीको अपने फैसले पर फिर विचार करना चाहिये।

"गांधीजीने दुबारा अिन्कार किया और अेक परचे पर लिखा — 'मुझे अिस लोभमें नहीं फंसना चाहिये। अुन्हें भूल जाना चाहिये कि मैं अंग्रेजी जानता हूं।'"

१३–२–'५४ **म० प्र०**
(अंग्रेजीसे)

विनोबाका जीवन-चरित्र

रोहा, जिला कोलाबा (बम्बअी राज्य)के श्री अनन्त बी० बर्वे मुझे लिखते हैं कि वे श्री विनोबा भावेका जीवन-चरित्र अंग्रेजीमें लिख रहे हैं। अिसलिअे सब सम्बन्धित लोगोंसे अुनकी प्रार्थना है कि वे विनोबाजीके सम्बन्धमें अपने संस्मरण या जीवन-प्रसंग अुन्हें भेजकर आभारी करें।

१३–२–'५४ **म० प्र०**
(अंग्रेजीसे)

शुभ समाचार

हरिजनोंके साथ किये जानेवाले क्रूर व्यवहारके अनेक अुदाहरण सुननेमें आते हैं। अिसकी तुलनामें नीचेकी खबर, जो सौराष्ट्रके मोरूका गांव, जिला सोरठसे अेक भाअीने भेजी है, पढ़कर सबको आनन्द होगा।

"ता० ३–२–'५४ को बम्बअीके वैष्णव सम्प्रदायके आचार्य श्री द्वारकादासजी महाराज यहां पधारे थे। अुन्होंने हरिजन राजा पुंजाको कंठी-प्रसाद ग्रहण कराया और अपने चरणस्पर्शका लाभ दिया। गांवकी आम सभामें अुन्होंने जो भाषण दिया, अुसमें अुन्होंने लोगोंसे मनुष्य-मनुष्यके बीचका भेद मिटाने,

मनुष्यके नाते अपना फर्ज अदा करने, राष्ट्रको संगठित बनाने तथा अस्पृश्यताको दूर करनेकी अपील की।"

वैष्णव लोग अिस बारेमें अपने आचार्यका अुदाहरण सामने रखकर चलें तो कितना अच्छा हो!

(गुजरातीसे)

म० प्र०

गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति*

४

अगर हम गांधीजीकी अहिंसक प्रतिकारकी पद्धतिका विश्लेषण करें, तो हम देखते हैं कि अुसका सार लोगोंसे अुनका तीन प्रकारका डर छुड़वानेमें था — जेलका डर, सम्पत्तिकी हानिका डर और मृत्युका डर। हिन्दुस्तानकी जनता विदेशी शासनके अन्तर्गत लगातार अिस तिहरे भयसे ही पीड़ित थी। आश्रमके सारे अनुशासनका मकसद अिस त्रिविध भयसे मुक्ति दिलाना ही था। कार्यकर्ता आश्रमके अनुशासनकी तालीम लोगोंके हितके लिअे, अुन्हींके बीचमें काम करते हुअे सीखते थे और अिस तरह अपने शान्त अुदाहरणके जरिये लोगोंको भी अुसकी दीक्षा देते थे।

लोगोंमें सहज सहकारकी आदत और अहिंसक अनुशासन तथा संघटनकी शक्ति पैदा करनेके लिअे अुन्होंने रचनात्मक कार्यक्रमका विकास किया। रचनात्मक कार्यक्रममें चरखा और खादीका प्रचार जैसे काम थे, जिनका अुद्देश्य अमीरों और गरीबोंके बीचकी खाअीको पाटना और सालमें नौ माह विवश बेकार रहनेवाले, भूखसे पीड़ित लाखों गरीबोंको अेक सहायक धन्धा मुहैया कर देना था। अुन्होंने पैसेवालोंको कहा कि वे मेहनतकश जनताके साथ अपनी अेकताके चिन्हके तौर पर चरखा चलायें और खादी पहिनें। स्त्रियोंका अुद्धार और मुक्ति, साम्प्रदायिक अेकताका निर्माण और अस्पृश्यताका सम्पूर्ण निवारण लोगोंमें अेकता और समानताके भावकी प्रतिष्ठाके और शराब तथा दूसरे मादक द्रव्योंका निषेध सामाजिक शुद्धीकरणके साधन थे। अुन्होंने अिस सारे कार्यक्रमको 'रचनात्मक अहिंसा' जैसा सार्थक नाम दिया था। अपनी अिन प्रवृत्तियोंके जरिये अुन्होंने लाखों-करोड़ोंको समानता और सख्यके सूत्रमें बांधा तथा अुनके दैनंदिन जीवन-व्यवहारमें अहिंसाका रंग भर दिया। वे कहते थे कि अहिंसक सेनाके लिअे रचनात्मक कार्यका वही महत्त्व और अुपयोग है, जो कि शस्त्रोंसे लड़नेवाली सेनाके लिअे कवायद और शस्त्रोंकी तालीमका है। अुनका अनुभव था कि जिस लड़ाअीमें हजारों-लाखों लोगोंसे सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सवालोंका फैसला होनेवाला हो, अुसके लिअे रचनात्मक कार्यकी तालीम और अभ्यासकी अनिवार्य जरूरत है। "लगातार रचनात्मक कार्य करते रहनेसे जनतामें कार्यकर्ताके प्रति जो विश्वास पैदा होता है, परीक्षाकी नाजुक घड़ियोंमें वह अुसका बेशकीमती अवलम्ब साबित होता है। लोगोंकी तैयारी न हुअी हो या जिन नेताओंको आन्दोलनका संचालन करना है, अुन्हें जनता जानती न हो, या अुनमें अुसका विश्वास न हो, तो वैयक्तिक आज्ञा-भंगसे कोअी लाभ नहीं हो सकता, और सामूहिक आज्ञा-भंग तो अैसी परिस्थितियोंमें बिलकुल असंभव है।"

रस्किनका कहना था कि सारी शिक्षाका ध्येय यह है कि मनुष्यमें सत्यके प्रति प्रेम और अन्याय तथा निर्दयतासे घृणाका भाव अितना दृढ़ कर दिया जाय कि वह अुसका संस्कार बन जाय। गांधीजीकी सारी प्रवृत्तियोंका ध्येय जनताको सत्यका दर्शन करने, अुसे जीवनमें अुतारने और अपने प्रतिदिनके सामाजिक तथा आर्थिक व्यवहारमें अहिंसाको प्रगट करनेके लिअे तैयार करनेका था। अगर जनता ये सब गुण सीख लेती है, तो फिर कोअी अुसे गुलाम नहीं बना सकता।

अिस तरह रचनात्मक कार्य अुनके हाथोंमें जनताकी तालीमका अत्यन्त शक्तिशाली हथियार बन गया। जिस तरह अुन्होंने अहिंसक ढंगसे आजादी हासिल करनेके लिअे हमें रचनात्मक कार्यक्रम दिया था, अुसी तरह अुन्होंने बादमें लोगोंको, आजाद भारतमें आजादीका पूरा स्वरूप क्या होगा, अिस बातका दर्शन करानेके लिअे बुनियादी तालीमकी योजनाका निर्माण किया। शिक्षाकी यह योजना शिक्षाको समाजमें व्यक्तिके रोजके जीवनसे अलग नहीं करती; वह व्यक्ति और समाजकी बुनियादी प्रवृत्तिको ही मनुष्यकी सारी शिक्षाका साधन बनाती है। गांधीजीने अिस शिक्षा-योजनाकी कल्पना अपनी सारी पिछली प्रवृत्तियोंके सर्वग्राही संगमके रूपमें की थी।

अिस निबन्धकी संकुचित सीमाओंके भीतर मैं आप लोगोंको गांधीजीके व्यक्तित्व, अुनकी पद्धति और अुनकी शिक्षाके कुछ पहलुओंका ही दर्शन करा सका हूं। मैं आशा करता हूं कि अुससे गांधीजीके विषयमें और ज्यादा जाननेकी आपकी भूख बढ़ेगी। जिन्हें अुसमें दिलचस्पी हो, अुन्हें अुस विषयका बहुत सारा साहित्य मिल सकता है। और अुसके सिवा मैं आशा करता हूं कि आप लोग खुद जाकर विनोबा भावेके भूदान-यज्ञका, और सेवाग्राममें आर्यनायकम्-दम्पतिके योग्य मार्ग-दर्शनमें चल रहे बुनियादी तालीमके प्रयोगका प्रत्यक्ष निरीक्षण और अध्ययन कर सकेंगे।

अेक बात और कहकर मैं अपना वक्तव्य समाप्त कर दूंगा। अगर गांधीजीका जीवन, अुनकी अिन सारी आश्चर्यजनक सफलताओंके साथ ही समाप्त हो गया होता, तो अुसमें हमें अिस प्रश्नका अुत्तर नहीं मिलता — क्या सत्य और शक्ति दोनों अुसी अेक वस्तुके सूचक, दो समानार्थी शब्द हैं? अगर सत्याग्रह अेक सर्वजयी शक्ति है — और वह बेशक सर्वजयी है — तो फिर सदा सफल होनेवाली किसी भी शक्तिको सत्य क्यों नहीं मान लेना चाहिये? और अगर अैसा मान लिया जाय तो क्या अुसका यह परिणाम नहीं आ सकता कि कोअी सफल होनेवाली शक्तिको ही अपना देव मान ले और अिस खतरनाक सिद्धान्तकी घोषणा करने लग जाय कि शक्ति ही सत्य है। दुनियामें हो रही घटनाओं और चल रहे व्यापारोंको अगर हम दीर्घकालकी दृष्टिसे न देखें, सीमित देश और कालकी ही दृष्टिसे देखें — जैसा कि हम सामान्यतः करते भी हैं — तो क्या हम अकसर यह नहीं पाते कि दुनियामें शक्तिकी विजय होती है और सत्य तथा न्याय पराजित होता है? गांधीजीने अपनी मृत्युके द्वारा हमारे लिअे अिस प्रश्नका प्रश्नचिन्ह दूर कर दिया है। अुनकी मृत्यु कहती है कि हमारे कार्य तो हमारे हैं, पर अुनका परिणाम हमारे वशका नहीं है। मनुष्य घटना-प्रवाहका नियंत्रण हमेशा नहीं कर सकता। वह कितनी ही कोशिश क्यों न करे, अदृष्ट भी तो है, जिसे गीताने 'पंचम' कारण कहा है और अुसके फलस्वरूप कभी-कभी अैसी अनिष्ट परिस्थितियां खड़ी हो जाती हैं, जहां अुसका प्रयत्न नहीं चलता। लेकिन सत्याग्रही अुनमें से भी अुनकी बुराअीको हमेशा दूर कर सकता है। और सचाअी तथा अहिंसाके अनुसार अुनके मुकाबलेमें अपने सही आचरणके जरिये जहरको भी अमृतमें बदल सकता है, और जीवनकी अिन दुर्घटनाओंसे अुनका दंश, मृत्युसे भी अुसकी विजय छीन लेता है। जब वे अपने जीवनके सर्वोच्च विंदु पर थे, अुस समय — और मानो देशके प्रति अपनी जीवन-व्यापी सेवाके पुरस्कारके रूपमें — मनमें क्रोध या द्वेषको लेश-मात्र प्रवेश दिये बिना, अुन्होंने हत्यारेकी गोलियां झेलीं। अुनके मुंह पर आखिरी सांस तक भगवान्का नाम और आक्रमणकारीके लिअे प्रार्थनाकी भावना रही। अैसी महिमामयी मृत्युके द्वारा अुन्होंने अिस अत्यन्त दुःखदायी अन्तको भी विजय और सफलताका रूप दे दिया और अिस तरह अप्रतिम रीतिसे सत्याग्रहके अिस केन्द्रीय सत्यको प्रकाशित किया कि वह प्रतिकूल

* यह अिस भाषणकी आखिरी किस्त है। पहली तीन किस्तें ३०-१-'५४, ६-२-'५४ और १३-२-'५४ के अंकोंमें निकल चुकी हैं।

www.vinoba.in

परिस्थितिको भी सफलताकी सीढ़ीके रूपमें बदल सकता है, समर्पणके द्वारा विजय हासिल करता है, और बाहरी पराजयके बावजूद तथा कभी-कभी अुसके जरिये भी जीतता है। जिस साम्प्रदायिक अेकताकी स्थापनाके लिअे वे जिये और जिन्दगी भर परिश्रम करते रहे, लेकिन जो अुनके जीवनकालमें अुन्हें प्राप्त नहीं हो सकी — यहां तक कि कुछ लोग जिसकी बुनियादको ही शंकाकी दृष्टिसे देखने लगे थे — वह अुनकी अिस मृत्युके फलस्वरूप, अेक पलभरमें, विवादातीत सत्य वस्तु बन गयी, और भारत हमेशाके लिअे असाम्प्रदायिक राज्यके आदर्शसे जुड़ गया।

(अंग्रेजीसे) प्यारेलाल

अमेरिका और पाकिस्तान

[न्यूयार्कसे प्रकाशित 'दी न्यू आअुटलुक' नामक पत्र अपने दिसम्बर १९५३ के अंकमें पाक-अमरीकी सैनिक समझौतेकी चर्चा करते हुअे 'मजहबी राज्य और अमेरिका' शीर्षक सम्पादकीयमें अिस प्रकार लिखता है:]

गत माह पाकिस्तानने ब्रिटिश कॉमनवेल्थके अन्तर्गत डोमीनियन स्टेटसकी हैसियतवाले राज्यकी स्थिति छोड़कर, मजहबी गणतंत्र बननेका निर्णय किया है, यद्यपि अैसी आशा रख सकते हैं कि हिन्दुस्तानकी तरह वह भी कॉमनवेल्थके साथ नामका सम्बन्ध जरूर बनाये रखेगा। ब्रिटिश सरकार और निःसन्देह भारत सरकारको भी पाकिस्तानके अिस नये कदमकी सूचना अवश्य रही होगी, लेकिन भारत और पाकिस्तानके आपसी सम्बन्धों पर भविष्यमें अुसका क्या प्रभाव पड़ेगा और अुसके क्या परिणाम होंगे, यह अभी नहीं कहा जा सकता। अिसका कारण अंशतः यह भी है कि पाकिस्तान अपने लिअे जो नया विधान बनानेवाला है, अुसमें पाकिस्तानमें रहनेवाले अेक करोड़ हिन्दुओंके लिअे अल्पतम अधिकारोंका कोअी आश्वासन नहीं दिया जायगा।

अिस तरह मौजूदा परिस्थितिमें, जो यों भी काफी नाजुक है, तनावका अेक और कारण पैदा हो गया है। यह घटना खुद काफी विचारणीय है।

लेकिन हम देखते हैं कि अिस तरह बिगड़ी हुअी परिस्थितिको और ज्यादा बिगाड़नेवाली अेक चीज और हो रही है: अमेरिकाने पाकिस्तानको अपनी सैनिक ताकत बढ़ाने और अुसका संघटन खड़ा करनेके काममें मदद करनेका निर्णय किया है। यह अिसलिअे किया जा रहा है कि वाशिंगटन और लंदन दोनों पाकिस्तानको मुस्लिम राज्योंमें साम्यवादके खिलाफ अपना सबसे ज्यादा मजबूत साथी मानते हैं। अिस विषय पर ठीक विचार किया जाय, तो यह निष्कर्ष आना संभव है कि टर्कीको छोड़ दें तो पाकिस्तान ही अेक मजबूत मुस्लिम राज्य है। हमारे सरकारी नेता यह महसूस करते हैं — और हम मानते हैं कि अुनका विचार सही है — कि लड़ाअीके लिअे अुद्यत अुग्र साम्यवाद विश्वकी शांतिके लिअे बड़ा खतरा है। लेकिन साथ ही, हमें जान पड़ता है कि हमारे ये नेता यह भी मान बैठते हैं कि साम्यवादसे लड़ने और अुसे परास्त करनेका कोअी भी साधन अच्छा साधन है। पाकिस्तान अमरीकी मदद लेकर अपने सैनिक बलका संघटन करना चाहता है। अुसके विषयमें हमारी राय यह है कि पाकिस्तान और रूसके सम्बन्धकी बनिस्बत पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके सम्बन्ध ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं और दूरदृष्टिसे देखें तो अुनमें से किसीको भी मुख्यतः रूसके खिलाफ अपने संभाव्य साथीके रूपमें सैनिक सहायता देनेके बजाय हमारे हितमें यही ज्यादा अच्छा होगा कि हम अुन दोनोंमें मेल करानेके लिअे जो कोशिश कर सकते हों, करें।

दूरदृष्टिकी अिस नीतिके खिलाफ यह जरूर कहा जा सकता है कि वह सफल नहीं होगी और हमारी दृष्टि जिस तात्कालिक विपत्ति पर है वही पहले आ पड़ेगी। लेकिन अिनमें से कोअी भी बात निश्चयपूर्वक नहीं कही जा सकती। बड़ी बात यह है कि व्यक्तिकी तरह राष्ट्रको भी नैतिक अुद्देश्योंका संपादन नैतिक साधनोंके ही जरिये करना चाहिये। हमारी नजर जिस संभाव्य खतरे पर है वह कितना भी बड़ा क्यों न मालूम होता हो, अेशियाकी मौजूदा विस्फोटक परिस्थितियोंमें हमारा कोअी काम अैसा नहीं होना चाहिये, जो अिन दोनों देशोंका ध्यान आपसी समझौतेसे हटा दे; क्योंकि अुसके परिणाम बहुत गंभीर होंगे।

अगर किसी तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तानका समझौता हो सके और अुनमें मित्र पड़ोसियोंकी दोस्ती और सहयोगका अेक नया दौर शुरू हो जाय, तो यह घटना अपने आपमें साम्यवादके खिलाफ दक्षिण अेशियामें मजबूतसे मजबूत दीवालका काम करेगी। लेकिन अगर हमारी भ्रांत नीति या अुपेक्षा या जिस पर हमारा कोअी वश न हो, अैसे किसी दूसरे कारणसे अैसा नहीं होता, तो पाकिस्तानके अिस मजहबी राज्यमें हम लड़ाअीका चाहे जितना सामान भेजें, वह अुत्तरकी दिशासे छनकर आनेवाली साम्यवादकी धाराके खिलाफ अेक झूठमूठका काल्पनिक बांध ही खड़ा कर सकता है, अुससे अधिक कुछ नहीं।

(अंग्रेजीसे)

आत्म-शुद्धिसे मजबूती बढ़ेगी

[पटनामें प्रादेशिक कांग्रेस कमेटीके सदस्यों और अन्य कांग्रेसजनोंके बीच ता० १२-१-'५४ को किये गये प्रवचनसे।]

लोग अपनी-अपनी पार्टीको मजबूत बनानेकी बात करते हैं। पर मजबूत यानी क्या? अिसका चिन्तन नहीं करते। शुद्धीकरण करेंगे तो मजबूती बढ़ेगी। पर आज मजबूतीकी बात अैसी होती है कि अपने पक्षमें बुरे लोग हों तो अुनका बचाव करते हैं, और दूसरी पार्टीमें सज्जन हों तो भी अुनको खतम करें, अैसी वृत्ति होती है। यहां तक कि सामनेवाली पार्टीमें दुर्जन हों तो खुशी होती है, पर सज्जन हों तो दुःख होता है। अिसमें हिंसाकी भावना है। जो संस्थायें हैं वे डेमोक्रेसीमें अपना-अपना बल बढ़ाती हैं तो अुसमें खुशी होनी चाहिये। हमारा विश्वास होना चाहिये कि सामनेवाली पार्टी मजबूत होती है, परिशुद्ध होती है, तो हम कुछ खोते नहीं। वह शुद्ध होती है तो हमें भी शुद्ध होनेकी प्रेरणा मिलती है। पर सोचते तो यह हैं कि दूसरी पार्टीका जोर बढ़ेगा तो हमारा घटेगा। अिसलिअे हम दूसरेको कमजोर और अपनेको मजबूत देखना चाहते हैं। होना तो यह चाहिये कि दूसरेकी भी शुद्धि देखें और अपनी भी शुद्धि देखें। पर लोकसत्तामें संख्याका लोभ होता है। अिसे मैंने संख्यासुर कहा है। अैसा होता है तो हम अवांछनीय लोगोंको भी लेते हैं। खैर, जान-बूझकर जो अैसा करते होंगे वे संस्थाका नुकसान ही करेंगे, पर यदि जान-बूझकर नहीं करते, और शुद्धीकरणका खयाल नहीं रखते हैं तो पार्टी मजबूत नहीं बनेगी।

कांग्रेसके लिअे शुद्धिकी अत्यन्त आवश्यकता है। प्रजा-समाजवादियोंके लिअे भी शुद्धिकी आवश्यकता है और जिन्हें रचनात्मक कार्यकर्त्ता कहते हैं अुन्हें भी शुद्धीकरणकी बहुत जरूरत है। अगर कोअी यह मानता है कि मैं चरखा चलाता हूं, मसाला खाना छोड़ दिया है, पैदल घूमता हूं, अिसलिअे मैं श्रेष्ठ हूं, और दूसरा सूत नहीं कातता है तो वह मुझसे नीच है, हीन है — अैसी भावना किसीके मनमें आती है, तो वह गिर गया। यह डर हर पार्टीमें है। पर रचनात्मक कार्यकर्ताओंमें अधिक है, क्योंकि वे तो गांधीजीके खास अनुयायी हैं। वे खास अनुयायी होनेका दावा करते हैं, ठीक है। पर देखते-देखते अभिमान प्रवेश कर सकता है। अिसलिअे शुद्धीकरणकी आवश्यकता है। कहनेका मतलब यह कि भूदान-यज्ञसे यह होगा और सबकी ताकत बढ़ेगी, और सबकी बढ़ेगी तो देशकी ताकत भी बढ़ेगी। मान लीजिये कि मेरी अेक पार्टी है,

www.vinoba.in

अुसकी १५ सेर ताकत है, आपकी अेक पार्टी है, अुसकी ५ सेर ताकत है, तो कुल मिलाकर २० सेर ताकत होती है। पर आपसमें द्वेष, मत्सर पैदा हो और कोअी कॉमन-ग्राअुण्ड, समान भूमि, नहीं पा सकें तो नतीजा यह होगा कि आपके और मेरे बीच हमेशा संघर्ष ही होगा। कुछ लोग संघर्षके तत्त्वको ही मानते हैं। अगर संघर्ष रहा तो २० सेर शक्तिके बजाय ५ सेर शक्तिका ही लाभ मिलेगा। जो ज्यादा शक्तिवाली पार्टी होगी, अुसकी अिज्जत होगी, परन्तु कुल मिलाकर देशकी हार होगी। देशकी जीत तो तब होगी जब अिन दोनोंका जोड़ होगा। यह तो तब हो सकता है, जब अैसा कोअी कार्यक्रम हो जिसमें सब पार्टीके लोग अेक हों और अेक होकर काममें लगें। हम समझते हैं कि भूदान पर आनेवाले आक्षेप आ चुके हैं। विचारकी छानबीन हो गअी है। और हरअेकके ध्यानमें आ गया है कि यह अुपयोगी चीज है। यहां तक कि कम्युनिस्ट पार्टीके लीडर श्री गोपालनजीने कह दिया है कि यद्यपि हम नहीं मानते कि भूदान-यज्ञसे भू-समस्या हल होनेवाली है, फिर भी हम अुसका विरोध नहीं करेंगे।

कांग्रेसमें भी कुछ लोग अैसे हैं, जो समझते हैं कि बाबा कम्युनिस्टोंके लिअे ग्राअुण्ड तैयार कर रहे हैं। संविधानमें तो खानगी मालकियतको मान्यता है, पर बाबा तो मालकियत भी मिटाना चाहते हैं। अिस तरह बाबा संविधानका विरोध कर रहे हैं।

प्लानिंग कमीशनके सदस्योंसे मेरी बात हुअी थी। अुनका भी अिस पर विश्वास नहीं था। पर अब अुनके ध्यानमें यह आया है और नयी रिपोर्टमें अुन्होंने अेक वाक्य लिख दिया है: भूमिके बंटवारेके लिअे भूमिदान-यज्ञ ही सबसे अुपयुक्त चीज है। कुछ लोगोंका विचार-परिवर्तन होता है। कुछका हृदय-परिवर्तन होता है। हृदय-परिवर्तनकी मिसाल गोपालनजी हैं और विचार-परिवर्तनकी मिसाल प्लानिंग कमीशनवाले हैं। अैसे लोग कांग्रेसमें पड़े हैं और समाजवादियोंमें भी अैसे लोग हैं।

कुछ लोग जयप्रकाशजी जैसे हैं, जो कहते हैं कि अिसमें हमें पूरा योग देना चाहिये। हम नहीं जानते, अिनका अल्पमत है या बहुमत। हम समझते हैं कि अल्पमत ही होगा। कुछ लोग अैसे हैं जो कहते हैं कि यह काम अच्छा तो है, पर अपने तरीकेका है, अपने ढंगका है। हमें तो संघर्ष करना चाहिये। तीसरे प्रकारके लोग हैं जो कहते हैं कि अिससे कुछ होने जानेवाला नहीं है। लेकिन अिसका विरोध नहीं करना है। पर अैसे बहुत कम लोग हैं। जिनका हृदय-परिवर्तन होना जरूरी है वह हो रहा है, और जिनका विचार-परिवर्तन होना जरूरी है वह भी हो रहा है।

आप सबका ध्यान अुस तरफ जरूर है कि पाकिस्तानका अमरीकाके साथ जो सम्बन्ध बन रहा है अुससे सावधान होनेकी जरूरत है। अगर हम केवल सेनाका बल बढ़ाते जायें, तो हम अमरीकाकी तुलनामें कुछ नहीं बढ़ा सकेंगे, और हमारी कुछ 'अिनीशिअेटिव' — आरंभ-शक्ति नहीं रहेगी। अिसका अर्थ यह होगा कि हम अपने देशको पाकिस्तानके हाथमें सौंप देते हैं। पाकिस्तान चाहे तो हमें दुर्जन बना सकता है, पाकिस्तान चाहे तो हमें सज्जन बना सकता है। पाकिस्तान चाहे तो देशको ताकतवर बना सकता है और पाकिस्तान चाहे तो देशको कमजोर बना सकता है। सावधानीका अर्थ तो यह होगा कि जिसे सेनाकी ताकत कहते हैं वह तो गवर्नमेन्टको जो करना हो वह करेगी। अुस पर ज्यादा जोर देना नहीं है। मुख्य बात तो यह है कि देशोंके बीच सौहार्द होना चाहिये। ये विद्वेष रखते हैं और संकटके समय अेक होना चाहते हैं। हम कहते हैं कि संकट आनेके पहले ही सौहार्द रखें, अेक हों, तो क्या बिगड़ेगा? हिन्दुस्तानकी ताकत बढ़ानेकी बात तो हम सोचते हैं, पर यह तभी होगा जब हम विषमता मिटायेंगे। हमें हरिजन-परिजन यह जो भेद है, वह मिटाना होगा। भूमिहीनोंको अपनाना होगा। यह नहीं करके केवल मिलिट्री बढ़ानेसे हिन्दुस्तान बचेगा, अैसा कोअी खयाल करे तो हम कहेंगे, वह पोलिटिक्सका अे० बी० सी० भी नहीं जानता। हमें जरा जाग्रत होना चाहिये। पार्टियोंके मतभेद कम होने चाहिये।

अेक भाअीने हमसे कहा था कि यह जो पाक-अमेरिका सम्बन्ध हो रहा है, अिससे लोगोंका ध्यान बंटेगा और भूदानका काम कुछ धीमा होगा। मैंने कहा, मैं तो मानता हूं कि अब लोग भूदानको जल्द सफल बनानेके लिअे कोशिश करेंगे। मैंने तो १९५७ की बात की है, पर अब १९५४ में ही अिसे पूरा कर देंगे, अैसी तड़प होनी चाहिये। मैं कह सकता हूं कि भूदान-यज्ञसे अब मसला हल हो सकता है। मैंने गणितसे यह काम नहीं अुठाया था। मेरे पास अुस समय गणित नहीं था, यद्यपि मैंने कहा था कि भगवान्‌से श्रद्धा अुठानेके बाद मेरी श्रद्धा गणित पर ही रहती है। लेकिन फिर भी पहले जब यह काम अुठाया था तो श्रद्धासे ही अुठाया था। आप लोग देख रहे हैं कि आज तक जितना काम हुआ है अुसमें कितनी मेहनत हुअी है। यह काम तो फुरसतसे हुआ है। तिस पर भी हवा बनी है, लोग देनेके लिअे तैयार हैं। तो यह बताता है कि अगर हम चार माहमें काम पूरा करना चाहें तो कर सकते हैं। अितना बड़ा अेलेक्शन, पर वह भी चार महीनेमें पूरा हुआ। दुनिया ताज्जुब करती है कि अितने बड़े देशमें, जहां अितने अपढ़ लोग हैं, अितनी शांतिसे अितना बड़ा अिलेक्शन कैसे हुआ। सब लोगोंने मिलकर जैसे चार मासमें वह काम खतम किया वैसे ही जहां तक विचारका ताल्लुक है, हम सब मिलकर यह काम चार माहमें पूरा कर सकेंगे, अैसा हमारा विश्वास है।

पंडित जवाहरलाल नेहरूने पार्लियामेन्टके सदस्योंके बीच बोलते हुअे कहा था कि यह काम पक्षातीत भावनासे करना चाहिये। अुन्होंने यह गहरी दृष्टिसे कहा था। अिसके मानी यह कि जो भी यह काम करेगा अुसकी अिज्जत बढ़नी चाहिये। सज्जनोंकी अिज्जत बढ़ेगी तो क्या हानि है। कुछ लोग कहते हैं कि बाबा कांग्रेसकी अिज्जत बढ़ाना चाहते हैं। कांग्रेसवाले कहते हैं कि जनता पार्टीकी अिज्जत बढ़ाना चाहते हैं। कोअी कहते हैं समाजवादी पार्टीकी अिज्जत बढ़ाना चाहते हैं। मुझे ये सारे आक्षेप मान्य हैं। जब सारे लोग आक्षेप करते हैं, तो हम मानते हैं कि जरूर यह काम सही है। हम चाहते हैं कि आप लोग पक्षरहित भावनासे काम करें।

अन्तमें अेक बात और। मैं आपका सच्चा हित चाहता हूं। मैं सब लोगोंका हित चाहता हूं। सबके हितके सिवा मुझे और कोअी बात महसूस नहीं होती है। और मैं नहीं मानता कि कांग्रेस, जिससे गांधीजीने काम लिया था, मिट गअी है। हां, यह बात जरूर है कि कुछ खराब लोग अुसमें घुस आये हैं। पर मुझे पूरी आशा है कि जिस तरह गांधीजीने काम किया था, अुसी तरह बिहारमें अहिंसक समाज-रचनाके कामोंमें मैं आपका अुपयोग कर सकूंगा।

विनोबा

विषय-सूची

		पृष्ठ
ट्रस्टके कामकाजका वार्षिक निवेदन	जीवणजी डा० देसाअी	४०९
नवजीवन ट्रस्टका हिसाब – १९५३	जीवणजी डा० देसाअी	४१०
'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे	मगनभाई देसाअी	४१२
गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति	प्यारेलाल	४१४
अमेरिका और पाकिस्तान		४१५
आत्मशुद्धिसे मजबूती बढ़ेगी	विनोबा	४१५
टिप्पणियां :		
जिस स्वतंत्रताके लिअे अुन्होंने काम किया था	म० प्र०	४१३
विनोबाका जीवन-चरित्र	म० प्र०	४१३
शुभ समाचार	म० प्र०	४१३

www.vinoba.in